चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में मानव सम्बन्धों का स्वरूप

* नीतू बंसल

चित्रा मुद्गल हिन्दी साहित्-ा की एक ऐसी जीवट महिला कथाकार हैं जिन्होंने कथा साहित्-ा को एक ऐसी भावभूमि प्रदान की जो आज के -ाथार्थ की सशक्त अभिव्-ाक्ति बन सके। चित्रा जी का व्-ाक्तित्व परिवेश व उनकी प्रवृत्ति वृहत्तर मानव सम्बन्धों की पीठिका बनाता है। इनका व्-ाक्तित्व सम्पूर्ण भारती-ा स्त्री की गरिमा का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ मानव सम्बन्धों की सघनता अनुभूत की जा सकती है। इसी सघनता का परिचा-ाक है उनका पहला उपन्-ाास 'एक .जमीन अपनी'। सम्बन्धों की आँच के ताप को उपन्-ाास में सहज महसूस कि-ाा जा सकता है। जहाँ एक ओर सम्बन्धों की गर्माहट उपन्-ाास के आखिर तक अनुभूत की जा सकती है। वहीं दूसरी ओर सम्बन्धों की बुझती आँच आगामी खतरे की ओर भी संकेत करती है। चित्रा जी पैदा-ाशी विद्रोही, समर्पित मजदूर नेता व सामाजिक का-ार्कर्ता हैं। वे मजदूर -ाूनि-ान से भी जुड़ी रही हैं। मजदूरों की समस्-ााओं व उनकी भीतरी परतों से वे पूरी तरह परिचित हैं। स्व-ां उन्होंने निम्न मध्-ावर्गी-ा जीवन जी-ा है। इन्हीं के परिवेश में खुद को ढालकर पूँजीवादी और मजदूर वर्ग के सम्बन्धों की गहराई से पड़ताल की है। उन्होंने अनुभूत कि-ाा है कि किस तरह पूँजीपति वर्ग मजदूर वर्ग का शोषण करते हैं और विकस का कोई सुख ईट गारा ढोने वाले मजदूर के हिस्से में नहीं आने देते।

चित्रा जी आज के वैश्वीकरण के दौर में सिमटते मानव-सम्बन्धों से आहत है जहाँ भारती-ा परिवार की धारणा लुप्त हो रही है और उसकी गरिमा ध्वस्त। इसी का जीता-जागता साक्ष्-ा है उनका तीसरा उपन्-ाास 'गिलिगडु'।'गिलिगडु' 'एक .जमीन अपनी' की भावी आशंका की उपज है। -ाहाँ सं-ाुक्त परिवार की धारणा पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है और एकल परिवार पूर्णत: अति वै-ाक्तिक। मानव सम्बन्धों का दा-ारा अत्-ान्त स्वार्थपरक व अवसाद ग्रस्त हो ग-ाा है। एक ओर चित्रा जी के व्-ाक्तित्व ने सम्बन्धों के सघन ताप की अनुभूति करा-ाी है तो दूसरी ओर उनके परिवेश ने पारिवारिक, सामाजिक व राजनीतिक सम्बन्धों की जमीन मुहै--ाा करा-ाी है और उनके अनुभव जगत ने मानव सम्बन्धों को एक न-ाी दिशा दृष्टि दी। अब हम चित्र जी के उपन्-ाासों में निहित मानव सम्बन्धों के निर्धारण की पृष्ठभूमि पर चर्चा करेंगे। रचनाकार जिन सम्बन्धों को भोगता है, अपने इर्द-गिर्द महसूस करता है उससे व्-ाापक मानव सम्बन्धों की भूमिका बनती है। सम्बन्धों का जाल हमारी संवेदनाओं के घनत्व पर भी निर्भर करता है। चित्रा जी ने विज्ञापन जगत में काम करने के अपने अनुभवों को 'एक .जमीन अपनी' में उकेरा है। विज्ञापन जगत के माहौल में उन्होंने गहराई से अनुभूत कि-ाा है और अपने अनुभवों का खुलासा करते हुए कहा है—''-ाौन स्वातन्त्-ा को स्त्री स्वातन्त्-ा का प-ाा-ा बनाने पर आमादा पुरुषवादी स्त्री-विमर्शकार स्व-ां के भोगवादी लालसाओं के संरक्षण के पक्ष में बड़ी चतुराई से स्त्री के एक बहुत बड़े वर्ग को अपनी देहवादी मानसिकता के प्रभाव में लेकर उसे 'वस्तु' बनाने में तुले हुए उसे -ाह सोचने का अवसर ही हाथ नहीं लगने दे रहे —इतने मा-ााजाल फैला दि-ो हैं उसके सामने कि उसकी दैहिक नुमाइश कतई उसकी अस्मिता अर्जन के संघर्ष को सिद्ध करने का माध्-ाम नहीं है।''१ इस शातिर पुरुषवादी मानसिकता के परिणामस्वरूप स्त्री विज्ञापन जगत के हाथों मात्र उपभोग की वस्तु बनकर रह ग-ाी है।

ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में चित्रा जी ने महसूस कि-ाा है कि किस तरह बहुराष्ट्री-ा कम्पनि-ाों ने मानव-सम्बन्धों को क्षतविक्षत कि-ाा है। बाजारीकरण से सम्बन्धों का ताप कम हुआ है। मानव मूल्-ा अस्त हो रहा है। मनुष्-ा बिल्कुल संवेदना शून्-ा हो ग-ाा है। आज किसी के पास किसी भी का-ार्-ा के लिए सम-ा नहीं है। इससे सामाजिक, पारिवारिक सम्बन्ध सहज व भावात्मक नहीं रह ग-ो हैं जितने कि पहले थे। स्वार्थ से उत्पन्न इस सम-ााभाव और संवेदनशून्-ाता के तले मानव सम्बन्ध चूर-चूर हो रहे हैं। महानगरी-ा परिवेश में पुरुष नौकरी की तलाश में गाँव-कस्बें से दूर च-ाा हुए, अपने बुजुर्गों से भी दूर हो ग-ो। बच्चे भी घर, परिवार के बड़े-बुजुर्गों के प्-ाार से वंचित हो ग-ो और उन्हें उनके प्-ाार की आवश्-ाकता भी नहीं महसूस हुई चूँकि वे अपने कम्प्-ाूटर जनित विकास में खुश हैं। संताने अपने माता-पिता से अलग रहने में जितनी सक्रि-ा हैं उतनी उनकी सम्पत्ति छीनने को भी सतर्क हैं। परिणामस्वरूप माता-पिता तिरस्कृत एवं उपेक्षित हो रहे हैं। चित्रा जी स्व-ां दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों में रही हैं। -ाहाँ के परिवेश को उन्होंने बेहद करीब से देखा है। उपन्-ाासों में उन्होंने परिवेश का जीवंत चित्रण कि-ाा है। सम्बन्धों की बुझती आँच को महसूस कि-ाा है। -ाहाँ घर और परिवार जैसी धारणा के लिए कोई स्थान नहीं है। ''सं-ाुक्त परिवार की अवधारणा लगभग विलुप्त हो गई है। लोग बहुत व्-ाक्तिवादी और अन्तर्मुखी होते जा रहे हैं। मूल्-ाों का टकराव तेज से तेजतर होता जा रहा है। पीढ़ि-ाों के बीच की खाई बढ़ती जा रही है।''२ अपने बुजुर्ग को रखना और उन्हें पालना एक विवशता बन ग-ाी है। इस तरह के रक्त सम्बन्ध अर्थ सम्बन्धों में परिवर्तित हो ग-ो हैं। पुरातन सम-ा में वृद्ध कभी एकाकी और निरीह

* शोध छात्रा हिन्दी, के.एम. मुंशी इन्सटीट्यूट, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

नहीं हुए। परिवार में उनका सम्मान था और इन वृद्धों से ही परिवार को पहचान मिलती थी। लेखिका ने नव पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के अन्तर्सम्बन्धों की गहराई से पड़ताल की है। भारती-ा समाज का ढाँचा सं-ुक्त परिवार का रहा है, परन्तु आज 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा में आस्था रखने वाले हमारे भारती-ा समाज में उपभोक्तावाद ने जो नीति-ाँ का-ाम की हैं वे इतनी अमानवी-ा व क्रूर हैं कि -ादि सम-ा रहते उन पर विचार नहीं कि-ाा ग-ाा तो आने वाले खतरों के दुष्परिणाम इतने भ-ाावह होंगे कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते। तुम मेरा उपभोग करो, मैं तुम्हारा और जब तुम मेरे उपभोग के ला-ाक नहीं रहोगे तो तुम्हारी उप-ाोगिता मेरे लिए खत्म। इस तरह के सम्बन्ध सभी के लिए घातक सिद्ध होंगे। सम्बन्धों की -ाह अतिवै-ाक्तिक न केवल हमारे मूल्-ाों को नष्ट करती है वरन् हमारे आगामी भविष्-ा को गर्त की ओर धकेलती है। चित्रा जी कहती हैं—''मैं आधुनिकता के खिलाफ नहीं हूँ, आधुनिक मूल्-ाहीनता एवं संवेदनशून्-ाता के खिलाफ हूँ।''३

वहाँ के स्त्री-पुरुष, मजदूर-पूँजीपति वर्ग के सम्बन्धों की अन्तता को समझा। ट्रेड़ -ूनि-ान में रहते हुए उन्होंने वहाँ के अंतर्विरोधों का सामना कि-ाा। इस विरोध के लिए संगठन के बड़े अधिकारि-ाों का भी सामना करना पड़ा साथ ही जेल भी ग-ाीं। -ाहाँ उन्होंने पूँजी और निर्धन के बीच की दूरी को परखा साथ ही संगठन के अंतर्विरोध जो कि संगठन के कुछ लोगों के द्वारा पैदा कि-ो ग-ो, उन सभी को जाना और -ो सभी उनके मानस पटल पर अंकित होते ग-ो। चित्रा जी मजदूर-मजदूरिनों के बीच श्रमिक नेता मीरा ताई के साथ झोपड़पट्टि-ाों में जाती थीं। उनके मैले-कुचले से कपड़े की पोटली में बँधी रोटी खाती, उनके बर्तनों में चा-ा पीती ताकि वे वास्तविकता को समझ सकें। इसलिए मजदूरों की सी निम्न स्तरी-ा जिंदगी भी जी। ''कहाँ पाँच सौ गज में फैला बड़ा सा शानदार बंगला और कहाँ आठ गुना आठ की चाल। मजदूरों की सी जिंदगी। सार्वजनिक शौचाल-ा में सुबह से लाइन लग जाती थी; सो भोर में चार बजे उठकर शौच के लिए जाती। छोटे से कमरे में वहीं लघु शंका कर पानी डालकर बहा देना। वही दो फट्टों पर बत्ति-ाों पर वाले स्टोव पर खाना बनाना। कबाड़ से लाए ट्रेड़ फी के ढक्कन में आटा गूँथना।''५ इस तरह चित्रा जी ने निम्न वर्गी-ा जीवन जीकर मजदूरों की जिंदगी के हर पहलू से परिचित हुई। -ाहाँ उन्होंने मजदूरों के बाह्-ाान्तर आघातों में सम्बन्धों की विकृति को देखा। इस बीच उन्होंने पूँजी और स्त्री के विकृत सम्बन्ध को भी देखा। जहाँ नारी शोषण विविध स्तरों पर कि-ाा जाता है। समग्रत: -ाही सब चित्रा जी के व्-ाक्तित्व, परिवेश व उनकी प्रवृत्ति से तादात्म्-ा कर उनके उपन्-ाासों के मानव सम्बन्धों की पूर्व पीठिका बना। इसी के साथ आगे हम चित्रा जी के उपन्-ाासों में मानव सम्बन्धों के स्वरूप का विश्लेषण करेंगे। उपन्-ाासों में मानव सम्बन्धों का एक बड़ा रूप पारिवारिक सम्बन्धों के रूप में दिखाई देता है। पति-पत्नी व पिता-पुत्र के टूटते सम्बन्ध, भाई-भावजों की अत्-ाधिक स्वार्थपरकता पारिवारिक विखण्डन की ओर संकेत करते हैं। 'एक .जमीन अपनी' की ना-िका अंकिता सं-ुक्त परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। वह परिवार को विशेष महत्व देती हैं। महानगरी-ा परिवेश के एकाकी जीवन में, नौकरी की भाग दौड़ी में पारिवारिक सम्बन्ध आत्मी-ा मिठास घोलते हैं। वह अपनी माँ की मृत्-ु के बहाने घर आती हैं तो वहाँ सम्बन्धों में गरमाई न पाकर व्-ाथित होती हैं। ''अंकित भावावेग में फूटपडी—''मुझे क्षमा कीजिए........मैं -ाहाँ हिस्सा-बाँट लेने नहीं आई.......सुबह जा रही हूँ। आप लोग इज्जत देते तो अम्मा के न रहने के बावजूद मेरे लिए देहरी बनी रहती..........।''६ -ाहाँ अंकिता घर और दात्पत्-ा जीवन की घुटन में लौटने के बदले अपनी सहेली नीता की बेटी मानसी को पालने की जिम्मेदारी लेती है।

'आवां' की ना-िका नमिता एक निम्न मध्-ावर्गी-ा -ुवती है। वह पुत्र भाँति अपने पिता व परिवार की भरसक सेवा सहा-ाता करते हुए, अपने भविष्-ा की दिशा त-ा करती है। संघर्षों से जूझती हुई नमिता अन्त में अपनी विधुर कर्कशा माँ के कारण घर वापस न आकर किशोरी बाई के घर में रहने का निर्ण-ा करती है, जहाँ वह सुनंदा की कमी पूरा करेगी। किशोरीबाई उसकी माँ न होकर भी उससे माँ जैसा स्नेह करती है परन्तु उसकी खुद की माँ पुत्री की भावनाओं की कद्र नहीं करती। -ाहाँ नमिता के प्-ाार से वंचित है। 'गिलिगडु' में पारिवारिक पात्रों के सम्बन्धों का एक त्रिकोण है—पिता-पुत्र-पुत्रवधु। पुत्र द्वारा वृद्ध पिता की उपेक्षा और पुत्रवधु द्वारा श्वसुर का निरादर। बच्चों को न दादा का ध्-ाान, न आवश्-ाकता। अपनी कम्प्-ूटर जनित जीवन शैली में वे इतने मस्त हैं कि उन्हें किसी की जरूरत नहीं। वे अपना जन्म-दिन 'मैकडोनल्ड' में मनाएंगे। वहाँ उन्हें दादा की उपस्थिति स्वीका-र नहीं है—''न-न-दादू! अपने साथ हम किसी भी बड़े को नहीं ले जा-ंगे—पार्टी बोरिंग हो जाएगी।''७ परिवार में पूर्णत: उपेक्षित बाबू जसवंत सिंह अपने पुत्र से सम्बन्ध विच्छेद कर नौकरानी सुनगुनि-ाा के पास रहने का निर्ण-ा लेते हैं। वे अपने मित्र कर्नल स्वामी के तर्पण के साथ अपने पुत्र के सम्बन्धों का भी तर्पण कर देते हैं। पिता-पुत्र सम्बन्धों के रूप में 'गिलिगडु' में दोनों वृद्ध अपनी संतानों के हाथों क्रूरतापूर्वक मारे जा रहे हैं। पल-पल, तिल-तिल। एक झटके में उनका काम तमाम नहीं कि-ाा जा रहा है क्-ाोंकि कर्नल स्वामी के पुत्रों को उनके फ्लैट का लोभ और जसवंत सिंह के बेटे बहु को उनके घर व बचत खातों का लोभ है। दामोदर दीक्षित ने लिखा है—''आज सं-ुक्त परिवार ही नहीं, सं-ुक्त परिवार की मानसिकता भी तार-तार हो रही है। एकल परिवार की अवधारणा न केवल मूर्तरूप में वरन् स्वार्थपरक -विद्रूप मानसिकता के रूप में विषबैल की तरह फैल रही है।''८ -ाहाँ तीनों उपन्-ाासों में पारिवारिक सम्बन्धों के मधुर स्रोत सूखते चले ग-ो हैं साथ ही सम्बन्धों की ऊष्मा भी रीत चुकी है। माँ एक शाश्वत सत्-ा है। तीनों उपन्-ाासों में माँ किसी न किसी रूप में उपस्थित है। जहाँ एक ओर 'एक जमीन अपनी' और 'गिलिगडु' में माँ वात्सल्-ा से आलोडित है वहीं 'आवां' में माँ अपनी पुत्री के साथ दुर्-व्यवहार करती सामने आ-ाी है। लेखिका ने स्त्री सम्बन्धों का -ाह रूप भी उजागर कि-ाा है कि—''स्त्री की वास्तविक लड़ाई स्त्री से है। कहीं वह सास बनकर शोषण कर रही है तो कहीं माँ बनकर चौकीदारी, तो कहीं ननद बनकर जासूसी तो कहीं प्रेमिका बनकर सीनाजोरी।''९

उपन्-ाासों में प्रेमी-प्रेमिका सम्बन्धों पर प्रकाश डालें तो -ाहाँ इन सम्बन्धों का विकृत रूप सामने आ-ाा है। 'एक .जमीन अपनी' में अंकिता-सुंधाशु के प्रेमम-ा सम्बन्ध असफल दाम्पत्-ा के रूप में सामने आते हैं। नीता-सुधीर के सम्बन्ध आत्महत्-ाा के रूप में सामने आते हैं। 'आवां' में नमिता -संज-ा के प्रेमम-ा सम्बन्धों का रूप नमिता को गलत राह पर जाते-जाते रोकते हैं। सुनंदा-सुहैल के सम्बन्ध सुनंदा की हत्-ाा के रूप में सामने आते हैं। दूसरी ओर उपन्-ाासों में असफल दाम्पत्-ा सम्बन्धों का एक लम्बा ग्राफ लेखिका ने तै-ाार कि-ाा है। 'एक .जमीन अपनी' में अंकिता-सुधांशु का असफल दाम्पत्-ा अँकिता को एकाकी जीवन जीने पर विवश करता है। 'आवां' में गौतमी के अपने पति अशोक से वैसे ही सम्बन्ध है जैसे घर की वस्तुओं से होते हैं–''अशोक के साथ भी मेरा -ाही रिश्ता है। शेष मैं क्-ाा हूँ, कहाँ जाती हूँ, किसके साथ सोती हूँ, सोना चाहती हूँ, सोती भी हूँ, -ाा नहीं सोती हूँ–कोई मतलब नहीं उससे। घर मेरा है। अशोक को रहना है रहे, न रहना हो छोड़कर चला जाए..........।''१० संज-ा कनौई अपनी पत्नी के दाम्पत्-ा अनुभव सुनाते हुए कहता है –''पुरुषों की बनिस्बत काम-कला में स्त्रि-ाँ मुझे अधिक निपुण लगती हैं। कभी ओबरा-ा के ब्-ाूटी पार्लर मार्टिन ग-ो हो? वहाँ गजब की चीनी लड़कि-ाँ हैं। अलबत्ता फीस तगड़ी जरूर है उनकी, सौदा घाटे का नहीं.......।''११

चित्रा जी के उपन्-ाासों में पारिवारिक सम्बन्धों से कहीं अधिक परिवारेतर सम्बन्ध अधिक सफल हुए हैं। -ो इतर मैत्री सम्बन्ध हैं। 'एक .जमीन अपनी' में अंकिता के नीता, हरीन्द्र मेहता से मैत्री सम्बन्ध मानव सम्बन्धों में माधु-र्ाता घोलते हैं। अंकिता क संदर्भ में उसकी सहेली नीता ने तो -ाहाँ तक कहना शुरू कर दि-ाा था कि ''वह एक ऐसा लॉकर है, जहाँ सब कुछ उगलकर निश्चिंत हुआ जा सकता है। अपने व्-ाक्तित्व पर की गई -ो टिप्पणि-ाँ अँकिता को न जाने कितना संबल सौंपती रही उसके संघर्ष की धार तीक्ष्ण करती हुई।''१२ 'आवां' नमिता के हर्षा, स्मिता, सुनंदा से सम्बन्ध व 'गिलगडु' में बाबू जसवंत सिंह व कर्नल स्वामी की मित्रता दोनों के जीवन में चहचहाट पैदा करती है। पारिवारिक सम्बन्धों के अतिरिक्त चित्रा जी के उपन्-ाासों में सामाजिक सम्बन्धों की विस्तृतता भी दृष्टिगोचर हुई है। उपन्-ाासों में भारती-ा समाज की छवि प्रस्तुत हुई है। -ाहाँ समाजिक सम्बन्धों का दा-ारा विस्तृत हुआ है। सामाजिक समीकरण तेजी से बदल रहे हैं। स्त्री मात्र सुन्दर देह नहीं बल्कि एक सक्रि-ा व्-ाक्ति भी है। हर स्त्री सही-गलत का निर्ण-ा लेना सीख रही है। -ाुवा स्त्रि-ाँ केवल आनन्द की वस्तु नहीं, वह अब सम्पूर्ण स्त्री है। वह अपनी सीमा और शक्ति से परिचित है। -ाहाँ स्त्री-पुरुष का व्-ाावसा-ािक सम्बन्ध बना है। वह अब पुरुषों के साथ केवल भावनात्मक सम्बन्ध ही नहीं बनाती, व्-ाावसा-ािक भी बनाती है। 'एक .जमीन अपनी' की ना-ािका अंकिता आम मध्-ामवर्गी-ा -ाुवा नारी का प्रतिनिधित्व करती हुई हमारे भारती-ा समाज का प्रतिबिम्ब है। वह एक सशक्त व जीवट चरित है। पुरुष प्रधान व्-ाापार में वह जिस प्रकार जमकर संघर्ष करती है, इससे सामाजिक सम्बन्धों का स्वरूप उजागर उठता है। साथ ही वह उन सामाजिक सम्बन्धों का भी प्रतिबिम्ब है। जहाँ आस्था, संस्कार के तत्व जुड़े हुए हैं। इसी आस्था, संस्कार के तत्व 'आवां' की ना-ािका नमिता और 'गिलिगडु' के पात्र जसवंत सिंह से जुड़े हुए हैं। इन पात्रों के रूप में लेखिका ने एक स्वस्थ सामाजिक सम्बन्धों का रूप उजागर कि-ाा है। साथ ही उन विघटनकारी नीति-ाों और षड़-ान्त्रों को भी उजागर कि-ाा है जहाँ इन सम्बन्धों का अस्तित्व खतरे में हो ग-ाा है। एक .जमीन अपनी के संदर्भ में डा. एन. ई. विश्वनाथ अ--ार ने लिखा है-'' विज्ञापन जगत और मध्-ावर्ग के परिवार की धांधली और दिखावट के कितने ही दृश्-ा दिखा-ो ग-ो हैं।''१३ ''एक .जमीन अपनी' की ना-ािका अंकिता कहती है–''लड़की समाज में इसलिए उपेक्षित निरीह रही है, क्-ाोंकि अपने घर में वह मात्र कर्तव्-ा होती है?–कर्तव्-ा से उत्रऋण हो उसे परा-ाा मान लि-ाा जाता है।''१४

उपन्-ाासों में सामाजिक सम्बन्ध एक दूसरे में गुत्थमगुत्था हैं। -ाहाँ परिवार, समाज के भीतर-बाहर भ-ांकर हिंसा व -ाौन हिंसा के आतंक में जीती औरतों के सम्बन्ध उजागर हुए हैं। इस तरह के सामाजिक सम्बन्ध स्थिति की द-ानी-ा स्थिति उजागर करते हैं। -ो स्त्रि-ाँ उपेक्षित, असुरक्षित असमर्थ व अपमानित हैं। 'आवां' में अनीषा, सुनंदा की हत्-ाा समाज में उनकी द-ानी-ा स्थिति उजागर करती है–''गौदरेज सोप फैक्ट्री में काम करने वाला किरपू दुसाध है जो सात महीने की गर्भवती अनीसा के साथ जबरन संभोग करने का दुष्प्र-ात्न करता है। अनीसा के राजी न होने पर दारू पिए ग्राहक ने उसके पेट में इतनी लातें लगाई कि उसका गर्भ गिर ग-ाा है और बच्चा पेट से बाहर निकल आ-ाा।''१५ स्त्री कहीं भी किसी भी जाति धर्म -ाा सम्प्रदा-ा की हो वह सर्वत्र शोषित व प्रताड़ित रही है। सुनंदा संदर्भ में एक मुस्लिम -ाुवक से उसका प्रेम व विवाह के लिए उसका धर्म परिवर्तन न करना और एक बच्चे की कुआरी माँ बनना समाज में स्वीका-र्ा नहीं तो उसकी हत्-ाा कर दी ग-ाी। समाज में इस तरह के सम्बन्ध शोषक व शोषित वर्ग के रूप में उजागर हुए हैं। जहाँ एक ओर शोषित स्त्रि-ाों का वर्ग उभरकर आ-ाा है वहीं दूसरी ओर पुरुष वर्चस्व को चुनौती देने वाली 'स्मिता, गौतमी, हर्षा जैसी स्त्रि-ाँ भी हैं। -ो स्त्रि-ां देह को हथि-ाार की तरह इस्तेमाल कर पुरुषों के लिए चुनौती बन ग-ाी हैं। स्मिता नमिता से कहती है–''संज-ा कनौई के संग तुझे रंगरेलि-ां मनानी ही थीं तो सावधानी बरतती? देह कोई चपाती सेंकने का तवा भर नहीं.............पानी में तब तक नहीं कूदना चाहिए, जब तक हाथ-पाँव मार तैरना न सीख लें।''१६ स्त्रि-ाों की इस तरह की सोच हर अवांछित स्थिति का सामना कर सकती है।

लेखिका ने समाज में पुरुष वर्ग की स्त्री देह का अतिक्रमण न कर पाने वाली मानसिक विकृति को स्त्री वर्ग द्वारा एक न-ो तरह से चुनौती दिलाई है। ''वह चाहती हैं कि स्त्री की देह धर्मी पहचान के बदले उसकी मानसिक एवं बौद्धिक पहचान भी बने। लेकिन इस देश का औसत पुरुष इस संस्कार से गहराइ-ाों तक अनुप्राणित है कि स्त्री वस्तु अथवा देह है जिसके चलते स्त्री मन और स्त्री सोच की उपेक्षा हो रही है।''१७ 'आवां' में फोटोग्राफर सिद्धार्थ नमिता का पोर्टफोलि-ाो बनाने के एवज में उससे दैहिक सम्बन्ध बनाने के लिए कहता है तो वह उसे फटकारते हुए कहती है–''आपके

प्रस्ताव पर मैं थूकती हूँ, सिद्धार्थ जी। शुभचिंतक को तो अपने भविष्-ा की जिम्मेवारी सौंपी जा सकती है, दलाल को नहीं। दलाल को तो हर औरत रंडी नजर आती है। बेहतर होगा आप फोटोग्राफी छोड़, चकला खोल लें।''१८

पारिवारिक, सामाजिक सम्बन्धों के अतिरिक्त राजनीतिक सम्बन्धों की भी महीन बुनावट उपन्-ाासों में दृष्टिगोचर हुई है। इन सम्बन्धों के रूप में लेखिका ने अपनी प्रखर सोच दी है। आज की राजनीति आम जनता को बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा कर रही है। वोटबैंक की राजनीति जातिवाद के आधार पर वोट बटोरने में लगी हुई है और खुद को धर्म निरपेक्ष बताकर जन साधारण की दृष्टि में भली बनने को प्र-ाासरत रहती ही है। ''............. राजनीति ने लोगों को बंटकर जीना सिखा दि-ाा है। वह बंटकर जीने को ही अपनी पहचान मानने लगे हैं।''१९

'गिलिगडु' में नारी पात्र सुनगुनि-ाा के माध्-ाम से दलित चेतना का उग्र रूप सामने आ-ाा है। सुनगुनि-ाा दलित विधवा स्वामीभक्त है। गाँव में उसका शोषण होने लगता है तो वह बच्चों को लेकर कानपुर भाग आती है। -ाहाँ नेता उसे तरह-तरह के प्रलोभन देकर बामन ठाकुरों के प्रति भड़काते हैं–''बामन-ठाकुरों ने हमेशा उनकी बहु बेटि-ाों की आबरू लूटी है। पनपने नहीं दि-ाा उन्हें।''२० तो वह कहती है– ''गाँव में उसको बामन-ठाकुरों ने नहीं सता-ाा। सगे लोगों ने सता-ाा। सगे लोगों के लिए भी औरत-औरत ठहरी।''२१ वह जानती है–''जाति बिरादरी की आड़ ले वोट बटोरने वाले अहेरी दरअसल उनकी नींद उड़ी आँखों को चैन का सपना दिखाकर उनकी आँखों में अपने सपनों की फसल बे सोच रहे।''२२

'आवां' में ट्रेड़ -ाूनि-ान के माध्-ाम से राजनीतिक सम्बन्धों का निरूपण हुआ है। ट्रेड़ -ाूनि-ान का गठन अभावग्रस्त दलित और शोषित मजदूरों को शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए हुआ था पर अब इन मजदूर संगठनों का स्वरूप ही मजदूर विरोधी हो ग-ाा है। वे सामूहिकता के स्थान पर नेताओं को व्-ाक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के साधन बन ग-ो हैं। -ाहाँ लेखिका ने संगठन व आन्दोलन सम्बन्धी विवरणों का विशद विवरण दि-ाा है। ट्रेड़ -ाूनि-ानों के राजनीतिकरण, सत्ता के प्रति उनकी बढ़ती लोलुपता व उनमें बढ़ते भ्रष्टाचार की व्-ाापक जानकरी दी है। इस बीच लेखिका ने पूँजी और श्रम का भी सम्बन्ध स्थापित कि-ाा है। श्रमिक संगठन के अन्ना साहब जैसे बड़े नेता -ाौन विकृति-ाों के शिकार हैं। वे एक श्रमिक पुत्री के साथ दुराचार करने का प्र-ाास करते हैं–''पिता समान हूँ मैं, तुम्हारा पिता नहीं हूँ। नि-ान्त्रण में नहीं रहूँगा तो कह नहीं सकता क-ाा होऊँगा। तुम्हारी देह के साथ खेलने के लिए मैं स्वतंत्र हूँ।''२३

सिद्धार्थ नमिता से कहता है–''मैं बेहद स्पष्टवादी, ईमानदार, पेशेवर, रवै-ो का व्-ाक्ति हूँ। तुम्हें लक्ष्-ा तक पहुँचाने में कोई कसर नहीं रखूँगा लेकिन प्रत्-ोक अनुबंध में साठ प्रतिशत मेरा चालीस तुम्हारा। पोर्टफोलि-ाो बनाने के एवज में तुम्हे मेरे साथ दैहिक सम्बन्ध रखने होंगे।''२४ उपन्-ाास में इस तरह की विकृत मानसिकता के और भी पात्र हैं। संज-ा, पवार, अन्नासाहब, मटकाकिंग आदि जो स्त्री को मात्र उपभोग की वस्तु मानते हैं। कुछ नारी पात्र भी इस विकृत मानसिकता की शिकार हैं। -ाथा, निर्मला, गौतमी, स्मिता, अंजना आदि। -ो पूँजीवादी ढाँचे में ही मानव सम्बन्धों का स्वरूप तलाशते हैं। 'एक .जमीन अपनी' में सुधांशु, तिलक, सुधीर, आदि इसी विचारधारा के पोषक हैं।

'आवां' में बिखरते मजदूर संगठन के दौर में संगठित और संघर्षशील होते उत्पीड़ितों के शोषक वर्ग से सम्बन्ध उजागर हुए हैं। विशेषत: स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध में -ाह सिर्फ 'सोफिस्टिकेटेड फेमिनिस्ट उपन्-ाास' नहीं बल्कि शोषित स्त्रि-ाों और उत्पीड़ित दलितों का स्वतंत्र घोषणा पत्र है, जिसमें भावी संघर्ष की रणनीति के विचार बीज और चिंता-चेतना की सुस्पष्ट रूप रेखाएँ अंकित हैं।

पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक सम्बन्धों के अतिरिक्त और कई तरह के सम्बन्धों का सृजन हुआ है। उपन्-ाासों के पात्रों ने अपने तरह के सम्बन्ध स्थापित कि-ो हैं। हर एक पात्र के अपने विशेष तरह के सम्बन्ध हैं। -ो भिन्न-भिन्न सम्बन्ध ही उन्हें एक दूसरे से जोड़े रखते हैं। आवां में निम्न मध्-ा वर्ग का उच्चवर्ग से सम्बन्ध। नमिता जैसी -ाुवती का अभिजात्-ा पूर्ण जीवन शैली अपनाना। वह अंजना संज-ा, सिद्धार्थ, जैसे पूँजीपति-ाों के मोहजाल में फँसती है और अन्त में रेड कार्पेट के माध्-ाम से अपना विद्रोह दर्ज करती है। एक ऐसा विद्रोह जो व्-ाक्ति को वस्तु में तब्दील होने से बचाते हैं जो मानवी-ा सम्बन्धों की ऊष्मा बरकरार रखते हैं। 'एक .जमीन अपनी' में नीता का 'आवां' में गौतमी स्मिता, हर्षा आदि स्त्रि-ाँ इसी रेडकारपेट की शिकार हैं।

चित्रा जी ने मानव-सम्बन्धों को विस्तार से लेकर उनके क्षरण तक की प्रक्रि-ाा को उजागर कि-ाा है। 'एक .जमीन अपनी' , 'आवां' व 'गिलिगडु' में मानव सम्बन्धों का आधार उपभोक्तावादी संस्कृति रही है। उपभोक्तावाद व बाजारीकरण के सा-ो में सम्बन्धों में बिखराव आ-ाा है। घर, परिवार नष्ट हुए हैं। सं-ाुक्त परिवारों के स्थान पर एकाकी परिवार की धारणा बलवती हो रही है। चित्रा जी ने इस तथ्-ा को गहनता से महसूस कि-ाा और इसके कई पहलुओं पर विचार कर उनका सामाजिक विश्लेषण कर उपन्-ाासों में उतनी ही सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत कि-ाा है। महानगरी-ा जीवन ने व्-ाक्ति के स्तर को जितना ऊँचा ऊठा-ाा है, उसे सुविधा-सम्पन्न बना-ाा है, वहीं दूसरी ओर घर-परिवार की धारणा से दूर भी कि-ाा है। भारती-ा संस्कृति में घर-परिवार को विशेष महत्व दि-ाा ग-ाा है, परन्तु आज के टूटते बिखरते सम्बन्धों के दौर में घर-परिवारों के नष्ट होने से हमारे सांस्कृतिक मूल्-ाों की क्षति हुई है। 'गिलिगडु' में जसवंत सिंह सोचते हैं–''क-ाों वे बार-बार इस घर को अपना घर समझने की भूल कर बैठते हैं, जबकि उन्हें दसि-ाों बार, दसि-ाों तरह से समझा-ाा जा चुका है कि वे अपने काम से काम तक सीमित रहें।''२६ इस तरह के रक्त सम्बन्धों की ओर लेखिका ने ध्-ाानकर्षित कि-ाा है। उपन्-ाास में तेरह दिनों में जिए ग-ो बुजुर्गों की मानसिक जटिलता के रेशे उघाड़ते हुए मौजूदा दौर के बदलते जीवन-मूल्-ा के बीच उपेक्षित हो रहे बुजुर्गों की कथा कही है। इस सम्बन्ध में रजनी गुप्त ने लिखा है–''संस्कृति और बाजारवाद से उपजी सामाजिक विसंगति-ाों और विडम्बनाओं के बीच सांस लेती

नई और पुरानी पीढ़ी के अन्तर्सम्बन्धों और अन्त:संघर्षों के विस्तृत -ाथार्थ को पूरी अर्थवत्ता और गहरे सन्दर्भों तक सार्थक अभिव्-ाक्ति हो ग-ाी है।''२७

आधुनिकीकरण और बाजारीकरण के इस दौर में बाहर से जितने हम समृद्ध हुए हैं, उतने ही हम सम्बन्धों की दृष्टि से विपन्न हुए हैं। सम्बन्धों में माधु-ाता कम हो जाने से जो बिखराव आ-ाा है, उसे तीनों उपन्-ाासों में सूक्ष्मता से अंकित कि-ाा ग-ाा है। चित्रा जी ने अपने उपन्-ाासों के माध्-ाम से भारती-ा मूल्-ाों व संस्कारों को समाज में प्रतिष्ठित कि-ाा है। साथ ही पाश्चात्-ा संस्कृति के दुष्परिणामों को भी उजागर कि-ाा है। वो भारती-ा स्त्री-पुरुष को पश्चिमी सोच की आँधी में बहजाने से रोकना चाहती है। 'एक जमीन अपनी' की पात्रा नीता कहती है—''सोचती हूँ इस देश की स्त्री को -ाहीं का खुला हवा-पानी चाहिए, -ाहाँ की मिट्टी का पौधा -ाहीं के मौसम के अनुशासन में जी सकता है।''२८ सम्बन्धों की वैशिष्टता के सन्दर्भ में -ाह भी कहा जा सकता है कि -ाहाँ स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की विकृतता पाठक सम्मुख उजागर हुई है। इस विकृतता के फलस्वरूप स्त्री पुरुष के लिए मात्र देह है। दैहिक वर्णन में लेखिका ने एक कलाकार के सधे हाथों की भाँति कहीं भी अश्लीलता नहीं आने दी है।

मानव-सम्बन्धों का वैशिष्ट्-ा उनके संवेदनशील -ाथार्थ के परिप्रेक्ष्-ा में भी देखा जा सकता है। 'एक .जमीन अपनी' में पारिवारिक विघटन का अत्-ान्त मर्मस्पर्शी चित्र अंकित कि-ाा ग-ाा है। जो पूर्णत: -ाथार्थपरक है—''अम्मा के वि-ाोग से उतप्त ह्द-ा..........भौजाइ-ाों के कलहपूर्ण व्-ावहार से मर्माहत ....कैसे व्-ााकुल होकर भागी थी उन लोगों की ओर..........किसी प्रकार अम्मा के अंतिम दर्शन हो जाते। न सही। पर -ाही सोचकर दौड़ी आई थी, अभी उस घर में अम्मा के अंतिम स्पर्शों की गरमाई शेष होगी........भाई-भौजाइ-ाों के संग मन की व्-ाथा बाँट-बूँट लेगी।''२९ पर ऐसा कुछ नहीं होता। -ाहाँ लेखिका ने पारिवारिक सम्बन्धों में सूख चुकी आर्द्रता की ओर संकेत कि-ाा है। इसके साथ पश्चिमी सभ्-ाता के प्रभाव में मानवी-ा-सम्बन्धों में खोते भारती-ा जीवन-मूल्-ा व बदलती जीवन शैली का चित्रण भावप्रवणता के साथ कि-ाा ग-ाा है। 'आवां' में संवेदना के तार लगभग हर स्त्री पात्र से जुड़े हुए हैं। नमिता, सुनंदा, अनीसा, स्मिता, नीलम्मा किसी न किसी रूप में प्रताड़ित हैं। एक-एक स्त्री पात्र में घटित होता व्-ाथा तब इतना सघन हो जाता है कि संवेदना तीव्र आवेग के साथ उपजती है। 'आवां' में मुख्-ात: शोषक-शोषित सम्बन्धों में व्-ाथा की तीव्र अनुभूति हुई है। 'गिलिगडु' में बाबू जसवंत सिंह के माध्-ाम से मध्-ावर्ग की संवेदनहीनता के कई प्रसंग उपन्-ाास में आ-ो हैं। बेटे-बहु द्वारा उनका उपेक्षित होना, बात-बात में उन्हें टोकना, उनकी इच्छा-अनिच्छा को ध्-ाान में रखे बिना उन्हें बासी खाना खिलाना जैसे कई छोटे-२ प्रसंग संवेदना से जुड़ एक विशेष प्रकार का सौहार्द भाव पैदा करते हैं। रोजमर्रा की घटनाओं, प्रसंगों में परिवार के बुजुर्गों को किस प्रकार तिल-तिल मरना पड़ता है, इसका अत्-ान्त संवेदनशील चित्रण गिलिगडु उपन्-ाास करता है और सामाजिक -पारिवारिक जीवन के बदलते ढांचे और मूल्-ाों को सामने रखता है। इस तरह के परिवेश में न केवल सम्बन्ध क्षत-विक्षत हो रहे हैं, वरन् अमानवी-ाकरण की स्थिति-ाँ भी पनप रही हैं। इस दृष्टि से संवेदना का क्षरण हो रहा है। ''बुद्धि विकास की आड़ में बड़ी खूबसूरती से बच्चों को संवेदनाच्-ाुत कि-ाा जा रहा है– इतना कि बच्चे कभी परिवार में न लौट सके, न कभी अपना परिवार गढ़ सके।''३० इस तरह की सोच बच्चों में परिवारवादी भावना को खत्म करती है। सम्बन्धों में अलगाव की स्थिति उत्पन्न करती है। इस प्रकार दोनों वृद्ध अपने परिवार में जिन त्रासद अनुभवों से गुजरे हैं, उनके जीवन की मार्मिकता संवेदना को पुष्ट कर आज के -ाथार्थ की त्रासदी प्रस्तुत कर लेखिका ने ध्-ाानाकर्षित कि-ाा है। वर्तमान में पारिवारिक, सामाजिक, सभ्-ाता पर भी महत्वपूर्ण सवाल खड़े कि-ो हैं। बदलते न-ो जमाने के साथ पीछे छूटते जाते बुजुर्ग, छूटते, रिश्तों, सम्बन्धों का -ाथार्थपरक चित्रण कि-ाा है।

जहाँ एक ओर लेखिका ने मानवी-ा सम्बन्धों के विखण्डन की -ाथार्थपरक अभिव्-ाक्ति दी है वहीं दूसरी ओर उन सम्बन्धों को बचाने का भी भरसक प्र-ाास कि-ाा है। 'एक .जमीन अपनी' की ना-ािका अंकिता के माध्-ाम से सम्बन्धों की **छ्रद्गद्ध×द्यद्गद्ध** बचाने का प्र-ाास कि-ाा ग-ाा है। ''माँ की मृत्-ाु के बाद कागजात का लिफाफा और गहनों की पोटली उसने रीना के हाथ में ही थमा दी साधिकार, रखो इसे जो करना है करो ......मैं तुम लोगों के इस षड़-ान्त्र को सफल नहीं होने दूँगी..........मैं घर से अलग नहीं हो सकती।''३१ -ाही प्र-ाास 'आवां' व 'गिलिगडु' में भी कि-ाा ग-ाा है। वस्तुत: उपन्-ाासों में मानवी-ा सम्बन्धों की विशेष महत्ता रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. कमलेश भट्ट 'कमल', सम्बोधन, जुलाई-सितम्बर २००९, पृष्ठ-३०. २. डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, सम-ा माजरा। ३. ज-ामोहन एम. एस., संग्रथन, जनवरी-२००५, पृष्ठ-२७. ४. ज-ामोहन एम. एस., संग्रथन, जनवरी-२००५, पृष्ठ-२६. ५. स्नेह मोहनीश, लोका-ात, ३१ जुलाई २००७, पृष्ठ-३९. ६. चित्रा मुद्गल, एक .जमीन अपनी, पृष्ठ-१७७. ७. चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, पृष्ठ-३३. ८. दामोदर दत्त दीक्षित, दैनिक जागरण, दिसम्बर २००२ ९. चित्रा मुद्गल, एक .जमीन अपनी, पृष्ठ-११०. १०. चित्रा मुद्गल, आवां, पृष्ठ-३६१. ११. चित्रा मुद्गल, आवां, पृष्ठ-४२५. १२. चित्रा मुद्गल, एक .जमीन अपनी, पृष्ठ-२८. १३. डा. एन. ई. विश्वनाथ अ--ार, केरल ज्-ाोति, १९९१, पृष्ठ-१४. १४. चित्रा मुद्गल, एक .जमीन अपनी, पृष्ठ-१८२ १५. चित्रा मुद्गल, आवां, पृष्ठ-३५३. १६. चित्रा मुद्गल, आवां, पृष्ठ-५०८. १७. करुणा शंकर उपाध्-ाा-ा, सृजन समीक्षा, जनवरी जून २००८, १८. चित्रा मुद्गल, आवां, पृष्ठ-२९५. १९. चित्रा मुद्गल, एक .जमीन अपनी, पृष्ठ-८१. २०. चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, पृष्ठ-८२. २१. चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, पृष्ठ-८२. २२. चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, पृष्ठ-८३. २३. चित्रा मुद्गल, आवां, पृष्ठ-८४. २४. चित्रा मुद्गल, आवां, पृष्ठ-१३६. २५. अरविन्द जैन, सम-ा माजरा, पृष्ठ-५६. २६. चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, पृष्ठ-५६. २७. रजनी गुप्त, कथाक्रम, अप्रैल-जून २००७, पृष्ठ-११८. २८. चित्रा मुद्गल, एक .जमीन अपनी, पृष्ठ-२७२. २९. चित्रा मुद्गल, एक .जमीन अपनी, पृष्ठ-१७९. ३०. चित्रा मुद्गल, गिलिगडु, पृष्ठ-३४. ३१. चित्रा मुद्गल, एक .जमीन अपनी, पृष्ठ-१८२.